Dr. M. K. Jha,
Dept of Sociology,
V.S.J College Rajnagar

B.A. part-1
Paper-II
Social Thinker

Question- R.K. Merton के संदर्भ समूह की अवधारणा की समालोचना कीजिए।

Answer- अमेरिकन समाजशास्त्रियों में रॉबर्ट किंग मर्टन वह सबसे प्रमुख समाजशास्त्री हैं जिन्होंने सामाजिक विचारधारा एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त को वैज्ञानिकता प्रदान किया। R.K. Merton अपने अनुभवसिद्ध अध्ययनों के आधार पर संदर्भ समूह अवधारणा और मध्य सीमा के सिद्धान्त का प्रतिपादन कर समाजशास्त्र को नयी दिशा दी।

R.K. Merton एक प्रकार्यवादी समाजशास्त्री हैं जिन्होंने समानुरूपता (Conformity) के आधार पर संदर्भ समूह की अवधारणा प्रस्तुत किए हैं। समाजशास्त्र की शब्दावली में 'समानुरूपता' का तात्पर्य ऐसी दशा से है जिसमें व्यक्ति अपने समूह की प्रत्याशाओं और सामाजिक प्रतिमानों के अनुसार व्यवहार करके समूह से अपना एकीकरण स्थापित कर लेता है। मर्टन का कथन है कि "अनेक परिस्थितियों में यह समानुरूपता केवल व्यक्ति के अपने समूह तक सीमित नहीं होती है, बल्कि इसका विस्तार कुछ ऐसे समूहों में भी देखने को मिलता है जो उसके अन्त: समूह से भिन्न होते हैं।"

संदर्भ समूह एक ऐसा समूह है जिसके नियमों, व्यवहार-प्रतिमानों, मनोवृत्तियों, आदर्शों एवं मूल्यों को व्यक्ति आदर्श मानकर अपने आचरण या व्यवहार को ढालने का प्रयत्न करता है। संदर्भ समूह का अस्तित्व प्राय: व्यक्ति के मस्तिष्क में रहता है।

H. Hyman सर्वप्रथम संदर्भ समूह की अवधारणा 1942 में विकसित किए। Hyman ने मनोवैज्ञानिक आधार पर दो प्रकार के समूहों का उल्लेख किए हैं।
1. सदस्यता समूह (II) संदर्भ समूह।

1. सदस्यता समूह:- जब व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से जिस समूह में रहकर जीवन व्यतीत करता है और उसकी गतिविधियों में सक्रिय रूप में भाग लेकर उसके सदस्यों से प्रभावित होता है उसे वह व्यक्ति का सदस्यता समूह कहते हैं।

II. संदर्भ समूह- कुछ समूह ऐसे होते हैं जिसके सदस्य न होने के बाद भी व्यक्ति उन्हें अपना आदर्श मानता है तथा उसके आचरणों और मूल्यों से अपना एकीकरण करने का प्रयत्न करता है ऐसे समूह व्यक्ति का संदर्भ समूह बन जाते हैं क्योंकि इन्हीं के संदर्भ में व्यक्ति के विचारों और मनोवृत्तियों का निर्माण होता है तथा मानसिक रूप से भी व्यक्ति अपने आप को उनके समीप समझता है।

R.K. Merton ने कहा है कि जब व्यक्ति का अन्तःसमूह अपने सदस्य को व्यवहार के निर्देश देता है तब उसका सदस्यता समूह ही उसका संदर्भ समूह बन जाता है जबकि किसी बाहरी समूह द्वारा मानसिक रूप से निर्देश ग्रहण करने की दशा में एक बाह्य समूह व्यक्ति का संदर्भ समूह होता है।

R.K. Merton ने अनेक ऐसे समूहों का उल्लेख किया है जो विभिन्न दशाओं में व्यक्ति के लिए संदर्भ समूह बन जाता है जैसे-

1. सदस्यता समूह संदर्भ समूह के रूप में - Membership group as Reference groups. जब एक व्यक्ति अपने ही समूह के कुछ ऐसे व्यक्तियों के अपने व्यवहार का आदर्श अथवा संदर्भ मानने लगता है तब कोई उपलब्धि या सफलता उस व्यक्ति को पुरस्कार देती है जैसे सेना, खेल जगत में।

2. बहुल संदर्भ समूह - Multiple Reference group. व्यक्ति परिस्थिति की समानता के आधार पर तथा सम्पर्क की निकटता के आधार एक समय में विभिन्न लोगों के समूहों को आदर्श मानकर व्यवहार करता है। जिसे इस स्तर के समूह माना गया है।

3. विशिष्ट व्यक्तियों के समूह - Significant other - मर्टन के अनुसार कोई व्यक्ति जिन दूसरे व्यक्तियों को अधिक प्रतिष्ठित समझता है उसकी प्रतिमा, मूल्य और व्यवहार को अनुकरण करने लगता है जैसे आज कल आदि की प्रतिमा उसके संदर्भ ग्रहण करते हैं।

4. गैर सदस्यता समूह (Non-membership group) जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे समूह के सदस्यों के साथ अन्तःक्रिया नहीं करता फिर भी मानसिक निकटता के आधार पर उसका व्यवहार, विचारों और मूल्यों का अपनाता है तो वह गैर सदस्यता समूह कहलाता है।

5. नकारात्मक संदर्भ समूह - Negative Reference group. जब व्यक्ति सदस्यता समूह से अनुकूलन करने में असफल होने लगता है तब इस में व्यक्तियों का व्यवहार नकारात्मक माना जाता है जिसे मर्टन नकारात्मक संदर्भ समूह कहते हैं।

Scanned with Cam

R. K. Merton संदर्भ समूह के लिए निम्न प्रकार्यात्मक पक्ष प्रस्तुत किए हैं :-

1. संदर्भ समूह का सबसे महत्वपूर्ण प्रकार्य व्यक्ति का प्रत्याशित समाजीकरण करना है।
2. संदर्भ समूह का प्रकार्य एकरूपता द्वारा व्यक्तित्व का निर्माण करना है।
3. संदर्भ समूह का प्रकार्य नए मूल्यों, विचारों एवं व्यवहार द्वारा उच्च सामाजिक प्रस्थिति को प्राप्त करना है।
4. एक समाज विशेष में संदर्भ समूह सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाने में सहायक है।
5. संदर्भ समूह का प्रकार्य सामाजिक सम्बन्ध का मानसिक आधार पर विस्तार किया जाता है।

R. K. Merton ने संदर्भ समूह के प्रकार्यात्मक पक्ष को दर्शाए हैं जैसे कोई व्यक्ति संदर्भ समूह का आचरण, मूल्य और आदर्श को अपनाता है तब सदस्यता वाले समूह से अलगाव पैदा होता है जो अप्रकार्य है।

R. K. Merton के संदर्भ समूह की अवधारणा में संस्कृति, पर्यावरण एवं नवाचार से अनुकूलन एवं सामंजन कर उच्च मूल्य का निर्माण किया जाता है इस प्रसंग पर विचार नहीं किया फिर भी संदर्भ समूह का सिद्धान्त मानव व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन से सम्बन्धित खोज करने में महत्वपूर्ण है।

Scanned with Cam